इकाEC

ई सी आई एल गौरव

हिंदी दिवस विशेषाँक

प्रवेशाँक

अंक	प्रवेशाँक (01), सितंबर, 2012
प्रधान संरक्षक	मेजर जनरल (नि.) संजीव लूम्बा, से.मे. निदेशक (कार्मिक) तथा कार्यकारी अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
संरक्षक	श्री रमेश अमिन्हा प्रमुख (कार्मिक एवं प्रशासन) तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति
परामर्शदाता	श्री एन. नागेश्वर राव उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
संपादक	डॉ. राजनारायण अवस्थी हिंदी अधिकारी
संपर्क सूत्र	हिंदी अनुभाग, कार्मिक वर्ग इलेक्ट्रॉनिक्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, भारत सरकार (परमाणु ऊर्जा विभाग) का उद्यम, ई सी आई एल (पो.), हैदराबाद - 500 062 (आं.प्र.)	फोन : 040-27121808, 27186801, 27182585 फैक्स : 040-27162381 ई-मेल : hindicell@ecil.co.in

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं।
लेखकों के विचारों से निगम तथा संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

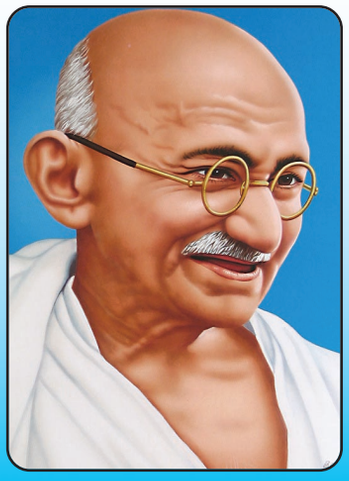

हिंदी के बारे में .....

अगर हमारे देश का स्वराज्य अंग्रेजी बोलने वाले भारतीयों का और उन्हीं के लिए होने वाला है, तो निःसंदेह अंग्रेजी ही राजभाषा होगी, लेकिन अगर हमारे देश के करोड़ों भूखे मरने वालों, करोड़ों निरक्षर बहिनों और दलित अन्त्यजों का है और इन सबके लिए होने वाला है तो हमारे देश में हिंदी ही एकमात्र राजभाषा हो सकती है।

- महात्मा गांधी

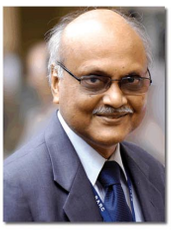

रतन कुमार सिन्हा
Ratan Kumar Sinha

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
Government of India

अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग
व
सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग
Chairman, Atomic Energy Commission
&
Secretary, Department of Atomic Energy

संदेश

प्रिय साथियों,

परमाणु ऊर्जा विभाग तथा देश-भर में फैली अपनी इकाइयों, उपक्रमों एवं सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत अपने सभी साथियों को मैं हिन्दी दिवस (14 सितंबर 2012) के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।

भाषा, विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है और यह हम सभी के लिए गौरव का विषय है कि हिंदी न केवल संपर्क भाषा के रूप में अपना शीर्ष स्थान बना रही है, बल्कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में काम-काज की भाषा के रूप में भी अपना अपेक्षित स्थान प्राप्त करने के लिए भी प्रयासरत है। आज का युग विज्ञान और प्रौद्योगिकी का युग है और भारत जैसे तीव्र प्रगतिशील एवं बहुभाषिक राष्ट्र के लिए यह बहुत जरूरी है कि हम अपनी सभी भाषाओं को पूरा आदर और सम्मान देते हुए संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी में काम-काज को और आगे बढ़ाएं तथा इसे उस स्थान पर लेकर जाएं जहां हम गर्व से यह कह सकें कि हम अपनी राजभाषा हिंदी में अपना अपेक्षित काम-काज कर रहे हैं।

साथियों, परमाणु ऊर्जा विभाग में कार्यरत हम सभी के लिए यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि नाभिकीय ऊर्जा के गैर विद्युत अनुप्रयोगों जैसे कृषि, स्वास्थ्य, उद्योग, पेयजल आदि क्षेत्रों से संबंधित अपनी विभिन्न गतिविधियों को जन सामान्य तक पहुंचाने का प्रयास हमारे विभाग के समर्पित साथियों द्वारा पूरी निष्ठा और कठिन परिश्रम से किया जा रहा है। हम अपने विभाग के आगामी लक्ष्यों के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं ही और मुझे पूरा विश्वास है कि इन लक्ष्यों की प्राप्ति में आप सभी अपनी-अपनी भूमिकाओं का निर्वहन करेंगे।

गत कुछ वर्षों से हिंदी भाषा का वैश्विक जनाधार बढ़ता रहा है और हम सभी को भारतीय होने के नाते इस बात पर गर्व होना चाहिए कि हमारी भारतीय भाषा हिंदी को विश्व स्तर पर भी सम्मान मिल रहा है। विश्व के विभिन्न भागों में विश्व हिंदी सम्मेलनों का आयोजन किया जाना इस बात का द्योतक है।

आइए, हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर हम यह संकल्प लें कि हम अपने विभागीय उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते हुए राजभाषा हिंदी के संबंध में सांविधिक अनिवार्यताओं का भी ध्यान रखेंगे और अपना अधिक से अधिक कार्य राजभाषा हिंदी में करेंगे तथा अपने सहकर्मियों को भी इसके लिए प्रोत्साहित करेंगे।

जयहिंद।

रतन कुमार सिन्हा

(रतन कुमार सिन्हा)

मुंबई
14 सितंबर 2012

प्रधान संरक्षक की कलम से.....

इलेक्ट्रॉनिक्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, हैदराबाद राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए काम कर रहा है। 'ई सी आई एल गौरव' के प्रवेशाँक का प्रकाशन इसीलिए किया जा रहा है। ई सी आई एल अपने तकनीकी एवं वैज्ञानिक कार्यों के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन को भी बड़ी गंभीरता से लेता है। हमारा निगम राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लक्ष्यों को सही अर्थ एवं भावना के साथ प्राप्त करने के लिए प्रयास कर रहा है।

राजभाषा कार्यान्वयन को आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़ना और उसको निगम के प्रत्येक कंप्यूटर तक पहुँचाना हमारा अगला लक्ष्य है। हिंदी अनुभाग के निरंतर प्रयासों से राजभाषा कार्यान्वयन में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) द्वारा निगम को वर्ष 2010-11 में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए 'राजभाषा कप' प्रदान किया गया। निगम के अधीनस्थ आँचलिक कार्यालयों में भी राजभाषा कार्यान्वयन सुचारु रूप से चल रहा है। इस वर्ष जून माह में नई दिल्ली स्थित आँचलिक कार्यालय में संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन पर संतोष व्यक्त किया गया।

इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम और भारत के संविधान की भावना के अनुरूप सभी भारतीय भाषाओं में पारस्परिक सहयोग का माहौल बनाते हुए आशा है कि हम सभी राजभाषा की प्रगति में निरंतर प्रयत्नशील रहेंगे।

मैं पत्रिका के परामर्शदाता एवं संपादक की हृदय से सराहना करता हूँ जिन्होंने अपने निर्देशन तथा अथक परिश्रम से पत्रिका को उपयोगी बनाया है। मुझे विश्वास है कि पाठकगण हमारे इस प्रयास पर अपने बहुमूल्य विचार देंगे।

जय हिंद। जय हिंदी।

संजीव लूम्बा

(मेजर जनरल (नि.) संजीव लूम्बा), से.मे.
निदेशक (कार्मिक)
तथा कार्यकारी अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक का संदेश

ई सी आई एल की हिंदी गृह पत्रिका 'ई सी आई एल गौरव' प्रवेशाँक आपके हाथों में देते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। हमारा निगम तकनीकी और वैज्ञानिक अनुसंधान तथा उत्पादन से जुड़ा है। वैज्ञानिक अनुसंधान तथा उत्पादन को राजभाषा हिंदी के साथ जोड़ना निगम का प्रमुख लक्ष्य है। इसी क्रम में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की यह संकल्पना थी कि ई सी आई एल में राजभाषा हिंदी में एक पत्रिका प्रकाशित की जाए। संघ सरकार के राजभाषा अधिनियम, नियमों और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के सभी मदों पर प्रगामी कार्यान्वयन करना हमारा ध्येय है।

मैं 'ई सी आई एल गौरव' के इस अंक से जुड़े राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्यों, परामर्शदाता तथा संपादक का विशेष रूप से आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, जिनके सहयोग एवं परिश्रम से इस अंक का प्रकाशन संभव हो सका। राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष के रूप में यह अंक समर्पित करते हुए मैं आशा करता हूँ कि राजभाषा के प्रचार- प्रसार में आपका सहयोग इसी प्रकार मिलता रहेगा। आप हमें अपने विचारों/ सुझावों से अवगत कराइएगा, जिससे कि आगामी अंक और अधिक सजीव, ज्ञानप्रद और रोचक बनाया जा सके।

एक बार पुनः आप सभी को धन्यवाद।

रमेश

(रमेश अमिन्हा)
प्रमुख (कार्मिक एवं प्रशासन)
तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

अपनी बात.....

हमारे निगम में ''ई सी आई एल समाचार'' नामक गृह पत्रिका का प्रकाशन कई वर्षों से किया जा रहा है जिसमें राजभाषा हिंदी से संबंधित कार्यक्रमों के बारे में जानकारी/ सूचना दी जा रही है। राजभाषा कार्यान्वयन समिति के निर्णयानुसार ''राजभाषा वार्ता'' नामक एक बुलेटिन भी हिंदी में जनवरी, 2012 में जारी की गई।

निगम के निदेशक (कार्मिक) तथा कार्यकारी अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक मेजर जनरल (नि.) संजीव लूम्बा, से.मे. की प्रेरणा से अब निगम में हिंदी में एक अलग पत्रिका 'ई सी आई एल गौरव' प्रकाशित की जा रही है। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा के कार्यान्वयन में एक कड़ी है तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक और कदम है।

यह पत्रिका न केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि निगम के कार्मिकों के उत्साह, रुचि, प्रतिभा और उमंग का प्रमाण है। इससे निगम में राजभाषा के प्रति उन्नत व्यापक सोच का संकेत मिलता है। ई सी आई एल का राजभाषा लक्ष्य भी निगम के मूल लक्ष्य का ही एक भाग है और हमें निगम की व्यावसायिक मान्यताओं और लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए इस लक्ष्य को पूरा करना है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका विद्वान पाठकों को प्रभावित करेगी तथा साथ ही राजभाषा के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित करेगी। इस गृह पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं संपादक को बधाई तथा साथ ही प्रतिभाशाली रचनाकारों को उनकी स्तरीय रचनाओं के लिए साधुवाद देता हूँ। हिंदी अनुभाग के सभी साथियों, जो निगम में राजभाषा के प्रचार- प्रसार के मूल स्तंभ हैं उनको इस संदर्भ में शुभकामनाएँ देता हूँ।

साधुवाद सहित,

(एन.नागेश्वर राव)
उप महाप्रबंधक (रा.भा.) एवं परामर्शदाता

कुछ लिखने से पहले .....

'ई सी आई एल गौरव' का प्रवेशाँक आपको सौंपना एक सुखद अहसास है। हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति की संवाहिका है। हिंदी स्वतंत्रता आँदोलन की भाषा रही है, हिंदी सरल, सुबोध और व्याकरण सम्मत भाषा है, हिंदी जनसाधारण की भाषा है, हिंदी भारत की अधिकांश जनता द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा है, हिंदी हमारा संस्कार है, हिंदी हमारी संस्कृति है। इसी संकल्पना को ध्यान में रखकर हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ सरकार की राजभाषा घोषित किया था। राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में बहुत कुछ सीखने, करने और इस क्षेत्र में ई सी आई एल को राष्ट्रीय स्तर पर एक अग्रणी संस्था के रूप में आगे ले जाने के उद्देश्य से मैंने दिनांक 1 अगस्त, 2012 को हिंदी अधिकारी पद का कार्यभार ग्रहण किया। आज ई सी आई एल जैसे अंतरराष्ट्रीय लब्धप्रतिष्ठ तकनीकी और वैज्ञानिक संस्थान में हिंदी अधिकारी होने के नाते मेरा यह परम दायित्व है कि प्रबंधन और निगम की कार्यशैली की आवश्यकताओं तथा आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए राजभाषा हिंदी को तकनीकी और प्रौद्योगिकीपरक बनाकर निगम के प्रत्येक कंप्यूटर तक पहुँचाया जाए।

निश्चित ही प्रबंधन को मुझसे बहुत आशाएँ होंगी, आज उन्हीं आशाओं का एक पल्लव आप सबके समक्ष प्रस्तुत है। मैं माननीय निदेशक (कार्मिक) तथा कार्यकारी अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक मेजर जनरल (नि.) संजीव लूम्बा, से.मे. और प्रमुख (कार्मिक एवं प्रशासन) तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति श्री रमेश अमिन्हा जी के प्रति सादर आभार सहित कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिनके कुशल निर्देशन के बिना पत्रिका- प्रकाशन का यह कार्य संभव न था। पत्रिका के परामर्शदाता एवं निगम के उप महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री एन.नागेश्वर राव जी का अनुशासनपूर्ण कुशल मार्गदर्शन मुझे पल-प्रति- पल प्रेरित और सजग करता रहा। मुझे विश्वास है कि निगम के प्रबंधन, मेरे वरिष्ठ अधिकारियों और सुधी पाठकों का मार्गदर्शन सदैव इसी प्रकार मिलता रहेगा तथा 'ई सी आई एल गौरव' समय के साथ नई-नई सफलताएँ प्राप्त करेगी।

इसमें मैं कहाँ तक सफल हो पाया इसका निर्णय आप जैसे सुधी पाठकों, समालोचकों के हाथों में है। आशा है कि आप 'नीर-क्षीर विवेक सम्मत' विचार अवश्य देंगे।

प्रख्यात दार्शनिक चार्वाक् के अनुसार ''कठोर परिश्रम से मनुष्य सब कुछ प्राप्त कर सकता है'', इस शास्वत सूक्ति को अपना जीवन- दर्शन और आदर्श वाक्य मानते हुए....

सादर, आपका

(डॉ. राजनारायण अवस्थी)
हिंदी अधिकारी एवं संपादक

राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यगण

क्र.सं.	नाम	पद/प्रभाग	पदनाम
01.	श्री रमेश अमिन्हा	प्रमुख (कार्मिक एवं प्रशासन)	अध्यक्ष
02.	श्रीमती सुधा श्रीवास्तव	वरिष्ठ उपमहाप्रबंधक, एम.आई.डी.	सदस्य
03.	श्री के.जगदीश्वर	वरिष्ठ उपमहाप्रबंधक, आर.सी.डी.	सदस्य
04.	श्री एन.नागेश्वर राव	उप महाप्रबंधक (राजभाषा)	सदस्य
05.	श्रीमती सीएच. स्वर्णकुमारी	वरिष्ठ प्रबंधक, सॉटकॉम	सदस्य
06.	श्री टी. प्रसाद	वरिष्ठ प्रबंधक, एस.ई.सी.सी. परि., ना.कां.	सदस्य
07.	श्री रंजन श्रीवास्तव	वरिष्ठ प्रबंधक (लेखा), आर.सी.डी.	सदस्य
08.	श्री यू.नागेश्वर राव	वरिष्ठ प्रबंधक, सी.ए.डी.-4	सदस्य
09.	श्री अशोक वी. राव	तकनीकी प्रबंधक, ई.एस.डी.	सदस्य
10.	श्री एल. मोहन सिंह	तकनीकी प्रबंधक, एस.एस.डी.	सदस्य
11.	श्री ओम प्रकाश गुप्ता	तकनीकी प्रबंधक, सी.एन.जी.	सदस्य
12.	श्रीमती डी.मैनावती	वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी, आर.आई.डी.	सदस्य
13.	श्री प्रशान्त कुमार	वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एस.ई.डी.	सदस्य
14.	श्री अनिल बी.मेश्राम	वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एस.पी.डी.	सदस्य
15.	श्री अशोक कुमार	वरिष्ठ अधिकारी, आई.सी.डी.	सदस्य
16.	श्री राहुल साहू	इंजीनियर (सी), ई.एम.एस.डी.	सदस्य
17.	श्री देवीदास	वरिष्ठ हिंदी अधिकारी	सदस्य- सचिव

ई.सी.आई.एल. के सॉलिड स्टेट कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर: संक्षिप्त परिचय

ईसीआईएल के सॉलिड स्टेट कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर (SSCVR) चार चैनल वाले वॉयस रिकॉर्डर हैं। इनको सिविलियन या सैनिक वायुयानों एवं हेलिकॉप्टरों में पायलट, सह-पायलट के बीच वार्तालाप, पी.ए. सिस्टम या चालक दल के किसी अन्य सदस्य तथा रेडियो संचार को रिकॉर्ड करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। कंट्रोल युनिट (CU) को कॉकपिट में SSCVR की मॉनिटरिंग और टेस्टिंग के लिए फिट किया जाता है। इसको प्रायः वायुयान के टेल इंड (पिछले भाग) में फिट किया जाता है। ग्राउंड सपोर्ट सिस्टम उपस्कर (GSE MU-5) का उपयोग प्रयोगशाला में, वायुयान में या प्ले-बैक करने के लिए एस.एस.सी.वी.आर. से रिकॉर्ड किए गए डाटा की 'फास्ट लोडिंग' के लिए किया जाता है।

एस.एस.सी.वी.आर.

एस.एस.सी.वी.आर. को सेमी-कंडक्टर टेक्नॉलॉजी की उन्नत प्रणालियों का प्रयोग कर तैयार किया गया है। इसकी दो प्रमुख इकाइयाँ हैं, मेन रिकॉर्डर युनिट (MRU) और कंट्रोल युनिट (CU)। एम.आर.यू. को अंतरराष्ट्रीय आरेंज रंग के 1/2 ए.टी.आर. उपस्कर केस में रखा जाता है। यह चार चैनल वाला रिकॉर्डर होता है। इसमें सॉलिड स्टेट फ्लैश मेमोरी होती है जो लगातार (कम से कम) दो घंटे तक ऑडियो डाटा को रिकार्ड करने का माध्यम है। जैसे ही एस.एस.सी.वी.आर. को पॉवर 'स्विच ऑन' किया जाता है उस समय से दो घंटे तक का डाटा चारों चैनल में उपलब्ध रहेगा।

फ्लैश मेमोरी की मुख्य उपयोगिता यह है कि बिना किसी पॉवर और 'एयरबार्न' अनुप्रयोगों के 'शॉक' और 'वाइब्रेशन' होने पर भी रिकॉर्ड किए गए डाटा को मेमोरी में रखता है। इस रिकॉर्ड किए गए डाटा की मेमोरी को विशेष केस में सुरक्षित रखा जाता है जिससे कि प्रतिकूल पर्यावरण परिस्थितियों जैसे- आग, ह्युमिडिटी (नमीं), वाइब्रेशन, इम्पैक्ट शॉक, एल्टीट्यूड, समुद्री जल तथा वायुयान फ्ल्यूड से इसे बचाया जा सके।

एस.एस.सी.वी.आर. को एफ.ए.ए. (फेडरल एवियेशन एडमिनिस्ट्रेशन, यू.एस.ए.) के स्पेसीफिकेशन TSO-C84 और ए.आर.आई.एन.सी-557 के अनुरूप तैयार किया गया है। इसको सेमिलैक (CEMILAC)/ आर.सी.एम.ए. (RCMA) ने 19-9-2005 को परीक्षित और स्वीकृत किया है।

नियंत्रण इकाई (कंट्रोल युनिट)

कंट्रोल युनिट (CU) मानक ए.टी.आर. पैनल- माउंटेड युनिट है। यह एम.आर.यू. को रिमोट से कंट्रोल करती है। इसमें रिकॉर्ड किए गए सिगनलों की मॉनिटरिंग के लिए एरिया माइक्रोफोन, प्री-एम्प्लीफायर, बल्क इरेज स्विच, इंडिकेटिंग मीटर, हेडफोन जैक और टेस्ट स्विच होते हैं। कंट्रोल युनिट को डी.जी.सी.ए. ने प्रमाणपत्र सं. AID/TC/ACC-001, दिनांक 10-03-1976 तथा एयरोनाटिक्स निदेशक ने प्रमाणपत्र सं. 493, दिनांक 30-08-1985 के तहत प्रमाणित किया है।

ग्राउंड सपोर्ट उपस्कर (GSE)

ग्राउंड सपोर्ट उपस्कर मिल्किंग युनिट- 5 (GSE-MU-5) का उपयोग एस.एस.सी.वी.आर. से डाटा डाउनलोड तथा 'प्ले बैक' करने के लिए किया जाता है। इसमें मल्टी चेनल प्ले युनिट (MPU-4), चार स्पीकर, यू.एस.बी. केबल तथा आवश्यक एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर सहित लैपटॉप होता हैं। एक बार जब डाटा लैपटॉप में ट्रान्सफर कर दिया जाता है तो इसको उपलब्ध यूजर फ्रेन्ड्ली सॉफ्टवेयर से अपेक्षित चेनलों को सेलेक्ट करके चैनल-वार प्ले किया जा सकता है। रिकॉर्ड किए गए डाटा के विशेष भाग को मार्क करके उसको अलग फाइल के तौर पर 'सेव' किया जा सकता है। सभी चैनलों को एम्प्लीफाइड सिगनल लेवल से एक साथ सुना जा सकता है। जी.एस.ई. एप्लिकेशन सॉफ्टवेयर में टेप रिकॉर्डर के सभी बेसिक फीचर जैसे- प्ले, पाज, फास्ट फार्वर्ड, रिवाइंड के साथ-साथ अन्य मल्टीमीडिया फीचर होते हैं। डाटा की बैक-अप कॉपी को विभिन्न प्रकार के स्टोरेज मीडिया में लिया जा सकता है। यह सिस्टम OAQA एवं DGAQA द्वारा स्वीकृत है।

प्रांतीय ईर्ष्या- द्वेष दूर करने में जितनी सहायता हिंदी- प्रचार से मिलेगी, उतनी किसी दूसरी चीज से नहीं।

- नेताजी सुभाषचंद्र बोस

एल.सी.ए.- एम.एम.आर. अन्टेना

1.0 परिचय-

'एल.सी.ए. मल्टीमॉड रडार' के लिए 'अन्टेना' अनेक कार्य करता है जैसे, 'रेडियो डिटेक्टिंग और रेंजिंग', 'इल्यूमिनेशन', 'आई.एफ.एफ.', 'गार्ड एवं आर.एफ. इंजेक्शन' इत्यादि। 'अन्टेना' को एल.सी.ए. वायुयान के 'नोज कोन' में स्थापित किया जाता है। इसका स्कैनर 'राडोम' के अंदर स्थित होता है। इसको 'एम.आई.एल.- ई-5400' के 'एअरबॉर्न इलेक्ट्रॉनिक' उपस्कर के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

1.1.1 एल.सी.ए. - एम.एम.आर. प्राथमिक अन्टेना:

'एल.सी.ए. मल्टीमॉड रडार' के लिए 'फ्लैट अन्टेना' में 'स्लाट' वाले 'वेवगाईड ऐरे' होते हैं, जिनका प्रमुख प्रयोजन विभिन्न विशिष्टताओं को पूरा करना है। इस अन्टेना में 'लांगिट्यूडनल रेडिएटिंग स्लॉट' होते हैं। ये 'स्लॉट' आयताकार 'वेवगाइड' की 'ब्रॉड वाल' में कटे होते हैं। 'अपार्चर' वितरण और 'मैच' देने के लिए इन 'लांगिट्यूडनल स्लॉट' के 'ऑफसेट' और लंबाई का निर्धारण अत्यंत सूक्ष्मता से किया जाता है। 'मोनो - पल्स ऑपरेशन' के लिए पूरे 'अन्टेना' को चार 'क्वाड्रैंट्स' में विभाजित किया जाता है। क्योंकि इस 'अन्टेना' का प्रयोजन 'ब्रॉडबैंड ऑपरेशन' है अतः प्रत्येक 'क्वाड्रैंट' आठ 'सब ऐरेज' में विभाजित किया जाता है। प्रत्येक 'सब ऐरे' को झुके हुए 'स्लॉट कॉपुलर्स' की दो परतों से 'फेड' किया जाता है। अत्यंत 'लो साइड लोब' स्तर और 'गेन' जैसी कठोर विशिष्टताओं को प्राप्त करने के लिए 'रेडिएटिंग अपार्चर' में विशिष्ट 'एम्प्लीट्यूड' वितरण के साथ इन प्रत्येक 'सब ऐरेज' के 'आउटपुट' और 'इनपुट' को असमान 1:8 'पॉवर डिवाइडर नेटवर्क' से क्रियाशील किया जाता है। 'क्वाड्रैंट आउटपुट' को दो अलग सिगनलों के 'सम' को देने के लिए आधी ऊँचाई वाले 'प्लेनर वेवगाइड लेंथ मोनो पल्स कॉम्परेटर' से जोड़ा जाता है। 'मोनो पल्स कॉम्परेटर' के 'अन्टेना' का मुख्य प्रयोजन यह है कि जब इसे 'अन्टेना प्लेटफॉर्म युनिट' में स्थापित किया जाता है तो विशेष 'लो हाई प्रोफाइल' में 'अन्टेना' के पूरे 'कवरेज' को सुनिश्चित किया जा सके।

1.1.2 आई.एफ.एफ. अन्टेना:

'फ्लैट प्लेट स्लाटेड ऐरे अन्टेना' एक प्राथमिक 'अन्टेना' है जिस पर द्वितीयक 'अन्टेना' 'आई.एफ.एफ. अन्टेना' स्थापित किया जाता है। 'आई.एफ.एफ. अन्टेना' भी एक 'ऐरे अन्टेना' है जिसको चार 'डाइपोल्स' के माध्यम से 'फॉर्म' किया जाता है। इसको स्थापित करने के लिए मुख्य 'अन्टेना' में चार 'डाइपोल्स' छिद्र होते हैं ताकि वे मुख्य 'मोनोपल्स कॉम्परेटर' के बीच में न आ पाए', मुख्य 'अन्टेना' के अंदर 'वेवगाइड' से न जाए तथा 'आई.एफ.एफ. अन्टेना' को उसकी विशिष्टताओं को प्राप्त करने में सहयोग दे। 'आई.एफ.एफ. अन्टेना' में चार 'आई.एफ.एफ. डाइपोल्स' होते हैं, ये चार 'आई.एफ.एफ. केबल' के साथ 'फ्लैट प्लेट स्लॉटेड वेवगाइड अन्टेना' पर चार विशिष्ट स्थानों में स्थित होते हैं। जो 'आई.एफ.एफ. डाइपोल्स' से 'आई.एफ.एफ. मोनोपल्स कॉम्परेटर' तक सिगनल लेते हैं तथा आवश्यक 'सम' और दिगंश सिगनलों को प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त होते हैं। 'आई.एफ.एफ. मोनोपल्स कॉम्परेटर' का प्रयोजन 'आई.एफ.एफ. केबल' 'लो लॉस केबल' होती हैं तथा ये काफी 'फ्लेक्सबल होती है। इसे 'आई.एफ.एफ. मोनोपल्स कॉम्परेटर फ्लैट प्लेट स्लॉटेड ऐरे अन्टेना' के पीछे स्थापित किया जाता है ताकि यह 'फ्लैट प्लेट स्लॉटेड ऐरे अन्टेना' के 'मोनो पल्स कॉम्परेटर' के बीच में न आने पाए। 'आई.एफ.एफ. मोनो पल्स कॉम्परेटर' स्ट्रिप लाइन मोनो पल्स कॉम्परेटर होता है। टी.ए.बी.

टेर्मिनल संयोजकों (कनेक्टर्स) का उपयोग मोनो पल्स कॉम्परेटर से सिगनलों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

यह माना गया है कि अब से 'एल.सी.ए.- एम.एम.आर. अन्टेना' पूर्ण 'एल.सी.ए.- एम.एम.आर.', प्राथमिक अन्टेना और 'आई.एफ.एफ. अन्टेना' की बीच का कार्य करेगा। 'एल.सी.ए.- एम.एम.आर.', प्राथमिक 'अन्टेना' में फ्लैट प्लेट स्लॉटेड अन्टेना' आधी ऊँचाई का वेवगाइड मोनो पल्स कॉम्परेटर' और 'गार्ड अन्टेना', होता है। 'आई.एफ.एफ. अन्टेना' में चार 'आई.एफ.एफ. डाईपोल्स, आई.एफ.एफ. मोनोपल्स कॉम्परेटर' तथा यदि विशेष रूप से निर्देश न हो तो चार 'आई.एफ.एफ.' होते हैं।

भारत के निर्माण में युवाओं का योगदान

(हिंदी सप्ताह के अंतर्गत आयोजित निबंध प्रतियोगिता में 'प्रथम' पुरस्कृत निबंध)

भारत सदियों की पराधीनता के बाद स्वतंत्र हुआ। पराधीनता की स्थिति में भारतवासियों को स्वेच्छापूर्वक उन्नति करने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ। भारतीयों को विदेशी सरकार के दबाव के कारण अपनी योग्यतानुसार कार्य नहीं करने दिया जाता था परंतु स्वतंत्रता के बाद यह स्थिति बदल गई है। किसी भी देश का भविष्य उसकी युवा पीढ़ी पर निर्भर होता है।

निर्माण का अर्थ है 'घर के वास्तविक ढाँचे को बनाना' किन्तु राष्ट्र निर्माण का अर्थ भिन्न है - इसका अर्थ है 'एक एकीकृत राष्ट्रीय संस्था' - जो राष्ट्र की शक्ति की सूचक हो। ऐसी संस्था ही युवा वर्ग या युवा शक्ति है। भारत एक विशाल जनसंख्या वाला देश है जिसकी जनसंख्या लगभग सौ करोड़ से अधिक है, इस जनसंख्या का 50 प्रतिशत हिस्सा युवा वर्ग से बना है जो 15 से 35 वर्ष की आयु के लोग हैं। इनमें विद्यार्थी, किसान, उद्योगपति, कर्मचारी एवं अन्य सभी वर्गो में कार्य करने वाले युवा शामिल हैं। ये सभी देश की असली कार्यशक्ति के स्रोत हैं।

इतिहास साक्षी है कि किस प्रकार युवाओं ने देश की स्वतंत्रता के विभिन्न आंदोलनों का हिस्सा बनकर उन्हें सफल बनाया और देश को स्वतंत्रता दिलाई। युवाओं की अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले युवा योद्धा थे - सरदार भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू और रामप्रसाद बिस्मिल इत्यादि। एक बड़े महत्वपूर्ण युवक जिन्होंने अपने आचरण से देश के युवाओं को दिशा दिखाने का कार्य किया, वे थेः स्वामी विवेकानंद।

राष्ट्र के युवा वह 'डायनामाइट' हैं जो यदि राष्ट्र निर्माण में सही ढंग से लगाए जाएँ तो राष्ट्र का उत्थान एवं कल्याण अति शीघ्र कर सकते हैं। वे ऐसे ऊर्जा स्रोत हैं जिन्हें सही दिशा निर्देश से भारत के कल्याण एवं राष्ट्र निर्माण में लगाया जा सकता है। आज युवाओं की सबसे बहुमूल्य संपदा हैः समय। यदि वे अपना समय सही ढंग से प्रयोग करें तो राष्ट्र निर्माण के कई महत्वपूर्ण कार्यो में सहयोग दे सकते हैं। वे जिन क्षेत्रों में योगदान देकर राष्ट्र निर्माण में सहयोग दे सकते हैं, वे निम्न प्रकार हैंः-

1. शिक्षा, 2. विद्यार्थी सहयोग, 3. कृषि, 4. उद्योग, 5. राजनीति, 6. वृक्षारोपण, 7. सफाई अभियान आदि।

विश्व की कुल आबादी का 18 प्रतिशत हिस्सा युवा है किन्तु भारत की कुल आबादी का 65 प्रतिशत युवा वर्ग है। इसका अर्थ यह है कि सारे विश्व की तुलना में भारत के पास अत्यधिक युवा शक्ति है। इसलिए हमें इस युवा धन को सही दिशा दिखाकर राष्ट्र- कल्याण व राष्ट्र- निर्माण के कार्य के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। भारत में प्रति 10 व्यक्तियों में 4 युवा हैं। इसका यह मतलब है कि उनकी

आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं को ध्यान में रखकर सरकार को ऐसी राष्ट्रीय नीति बनानी चाहिए जिससे अपने देश का मूल्यवान युवाधन देश में रुके और विदेशों की ओर आकर्षित न हो और अपनी मातृभूमि की सेवा करे। ऐसा तभी संभव है जब उन्हें रोजगार के सही अवसर प्राप्त होंगे।

आज का युवा पूर्व निर्धारित पथ पर चलना ही सुगम एवं सरल समझता है, जिससे उसकी परिकल्पना एवं अनुसंधान की शक्ति का ह्रास हो रहा है। युवा देश निर्माण व देश कल्याण को सर्वोपरि समझें, इसके लिए जरूरी है कि सर्वप्रथम अपनी आत्मशक्ति को पहचानें। निजी इच्छापूर्ति को राष्ट्र कल्याण के कार्यों से जोड़ें। इससे एक ओर राष्ट्र के उन्नत होने की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है वहीं दूसरी ओर निजी जीवन स्तर में भी सुधार लाया जा सकता है।

युवाओं ने अपने तकनीकी ज्ञान के प्रचार-प्रसार से राष्ट्र की उन्नति में कई महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं। आज युवा हर क्षेत्र में यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि कार्य कुशलता एवं कार्य क्षमता बढ़े। युवाओं ने कई देशों में राजनैतिक परिवर्तन में योगदान दिया है और भारत में भी गुजरात व बिहार में राज्य सरकारों में बदलाव की प्रक्रिया में मुख्य भूमिका निभाई। आज हर क्षेत्र में भारत के युवा अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं जैसेः-

खेल में- सचिन तेंदुलकर व अन्य
राजनीति में- अखिलेश यादव, सचिन पाइलट आदि।

स्वामी विवेकानंद कहते थे ''उठो, जागो, रुको नहीं'', वे कहते थे राष्ट्र निर्माण की असली जिम्मेदारी युवाओं की है। वे चाहते थे युवा आलस्य त्याग कर देश कल्याण व देश निर्माण कार्यों में लग जाएँ। युवा विज्ञान, तकनीकी, खेल, राजनीति एवं अन्य सभी क्षेत्रों में योगदान करके राष्ट्र की काया बदल सकते हैं। वे निम्न क्षेत्रों में अपने योगदान से बदलाव ला सकते हैंः-

1. भ्रष्टाचार उन्मूलन।
2. गरीबी उन्मूलन।
3. जनसंख्या वृद्धि की रोकथाम।
4. उग्रवाद व आतंकवाद की समाप्ति।
5. देश-प्रेम व राष्ट्रीयता की भावना।

स्वामी विवेकानंद कहते थे कि इस विचार धारा को बदलना है कि जो भी राष्ट्र निर्माण का कार्य है वह सरकार करेगी। वे कहते थे कि सरकार केवल नीति या परियोजना बना सकती है पर उसे पूर्ण करने में युवाओं का सहयोग अत्यंत आवश्यक है - युवाओं के योगदान एवं सहयोग के बिना कोई भी राष्ट्र कल्याण या राष्ट्र निर्माण का कार्य पूर्ण होना संभव नहीं। युवा अपनी शक्ति को सही दिशा में लगाएँ जिससे वे स्वयं भी उन्नत हों और देश की भी उन्नति हो तथा डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का भारत को 'सर्वश्रेष्ठ विश्वशक्ति' बनाने का सपना भी पूर्ण हो।

स्वामी विवेकानंद चाहते थे कि राष्ट्रीय युवा केंद्र बनें ताकि युवाओं को देश की मुख्य धारा से जोड़ा जा सके। उन्हें हर क्षेत्र में कार्य करने का अवसर देने से वे स्वयं को गौरवान्वित समझेंगे और राष्ट्र का भी कल्याण होगा।

सुनील कुमार शर्मा
लेखा परीक्षक
आई.एस.डी. (एफ.ए.डब्ल्यू.)

धरती मेरी माँ

ऐ धरा, ऐ वसुंधरा, है हम सबकी माँ,
यह हमें है पालती, हमें है इस पर नाज़।

चन्द्र इसका आभूषण, सूर्य इसका तेज,
हरियाली इसकी सुंदरता, मेघ इसके केश।

बालावस्था से वृद्धा तक, यह हर पल हमें है सींचती,
सब कुछ यह हमें देती, फिर भी हमसे कुछ नहीं लेती।

पुत्र होने के नाते, यह मेरा कर्त्तव्य है,
इसकी सुंदरता और बढ़े, यही मेरा दायित्व है।

इसकी हरियाली और बढ़े, इसकी सुंदरता अक्षुण्ण रहे,
यही हमारा प्रण है, संकल्प है, यही हमारा कर्त्तव्य है।

आओ हम यह प्रण लें, सब मिलकर यही शपथ लें
पेड़ पौधे बिलकुल न काटें, एक के बदले दस लगाएँ।

सतीश चंद्र
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, ए.पी.एस.डी.

हिंदी की बरसात

रोज होती है हिंदी की बरसात
हम सभी को भींगना है साथ साथ
हिंदी की उन्नति के लिये देना है साथ
क्या दिन क्या रात सभी को करना है हिंदी में बात
हिंदी होती नहीं नवजात
हिंदी है राष्ट्रीय जल प्रपात
आओ करलें हिंदी से एक मुलाकात।

हिंदी है हम सब का विश्वास
सभी को लाती है पास पास
अब हिंदी के बिना
चलती नहीं हमारी साँस
हिंदी दिलाती है दोस्ती का अहसास
हिंदी देश की एकता और अखण्डता की माला है
हिंदी में छुपा है स्वाभिमान का रहस्य
हिंदी है वीर गाथाओं का उपन्यास
हिंदी में भरा है व्यंग्य और हास्य
कितना भी पढ़ो या लिखो
फिर भी बुझती नहीं हिंदी की प्यास।।

पी. प्रभुदास
उप महाप्रबंधक (कार्मिक), एस.एस.डी.

अर्पण

दुनियाँ बनाने वाले क्या खूब बनाई दुनियाँ
कभी समंदर में आग लगाई और कभी समंदर से आग बुझाई।
कभी छोड़ दिया समंदर को जमीन को मिटाने
और कभी हटा कर जमीन को बनाया।

तू ही मालिक है और तू ही रखवाला
तू ही विधि भी और तू ही विधि का विधाता
तू ही देता है और लेता भी तू ही।

तेरा तुझको देकर मैं तुझको क्या दे पाऊँगा भगवान।
फिर भी अर्पित करता हूँ चरणों में तेरे
ये ज़हान और ज़िंदगानी मेरी।।

रमेश अमिन्हा
प्रमुख (कार्मिक एवं प्रशासन)
तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

एन्टी- प्रोटॉन एवं ऑयन अनुसंधान फैसिलिटी, जी एम बी एच (एफ.ए.आई.आर.) जर्मनी के लिए पॉवर कनवर्टर्स आपूर्ति हेतु बोस संस्थान और ई.सी.आई.एल. के बीच संविदा

दिनांक 8 सितंबर, 2012 को ई.सी.आई.एल. ने डॉ. टी. रामासामी, सचिव, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार की गरिमामयी उपस्थिति में एन्टी- प्रोटॉन एवं आयन अनुसंधान फैसिलिटी, जी.एम.बी.एच. (एफ.ए.आई.आर.) जर्मनी के लिए अति आधुनिक पॉवर कनवर्टर्स की आपूर्ति के लिए बोस संस्थान, कोलकाता के साथ ऐतिहासिक द्विपक्षीय संविदा साइन किया। इस ऐतिहासिक 50 करोड़ रूपये की संविदा पर मेजर जनरल (नि.) संजीव लूम्बा, से.मे. कार्यकारी अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ई.सी.आई.एल. तथा श्री टी.के.घौरी, प्रशासनिक अधिकारी, बोस संस्थान, कोलकाता ने हस्ताक्षर किया। इस अवसर पर मेजर जनरल (नि.) संजीव लूम्बा, से.मे. ने कहा कि ई.सी.आई.एल. अत्यंत महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी परियोजनाओं में योगदान देता रहा है, जैसे- सी.ई.आर.एन., स्विटजरलैंड में लार्ज हैड्रॉन कोलिडर (एल.एच.सी.)।

अंतरराष्ट्रीय थर्मोन्युक्लियर एक्सपेरिमेन्टल रिएक्टर (आई.टी.ई.आर.), हानले, लद्दाख में 21 मीटर एम.ए.सी.ई. (मेजर एटमास्फेरिक सेरेनकोव एक्सपेरिमेन्ट, टेलीस्कोप, अंटार्कटिका के भारती स्टेशन में पृथ्वी परीक्षण उपग्रह और संचार सुविधा के लिए ग्राउंड स्टेशन। डॉ. सिबाजी राहा, निदेशक, बोस संस्थान, कोलकाता ने कहा कि इस परियोजना से ई.सी.आई.एल. प्रौद्योगिकी का नया अध्याय शुरू करेगा। श्री डी.के. श्रीवास्तव, निदेशक, वी.ई.सी.सी. ने उन दिनों की याद दिलाई जब भारत को उन्नत प्रौद्योगिकी नहीं दी जाती थी लेकिन आज प्रौद्योगिकी संपन्न देशों के साथ भारत कंधा से कंधा मिलाकर चल रहा है। श्री ज्ञान प्रकाश श्रीवास्तव, निदेशक, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं इंस्ट्रमेन्टेशन ग्रुप, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, मुंबई ने यह विश्वास दिलाया कि इस परियोजना के लिए बी.ए.आर.सी. से सभी प्रकार की तकनीकी सहायता उपलब्ध कराई जाएगी और साथ ही ई.सी.आई.एल. की सफलता की शुभ- कामना की।

डॉ. टी.रामासामी, सचिव, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग ने ई.सी.आई.एल. को बधाई दी तथा विश्वास व्यक्त किया कि ई.सी.आई.एल. और बोस संस्थान आपसी सहयोग से काम करके सफलतापूर्वक इस परियोजना को पूरा करेंगे।

श्री वाई.एस.मय्या, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, बी.ए.आर.सी. और पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ई.सी.आई.एल. ने ई.सी.आई.एल. की क्षमता और अंतरराष्ट्रीय परियोजनाओं में इसकी सहभागिता की प्रशंसा की।

हिंदी के प्राचीन रूपों का फैलाव दक्षिण से आरंभ हुआ और हिंदी का विकास बंगाल से। आज हम गर्व से कह सकते हैं कि हिंदी का विकास उनके द्वारा हुआ जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं थी। निश्चय ही उनकी राष्ट्रभावना भाषा, प्रांत या वर्ग से ऊपर थी, जिन्होंने इसे स्वीकार किया और राष्ट्रभाषा होने योग्य कहकर अपनाया।

- आशारानी व्होरा

अंटार्कटिका के लिए ई सी आई एल की अंटेना प्रणाली श्री डी.एस.जैन, उप निदेशक, एन.आर.एस.सी. द्वारा रवाना

मेजर जनरल (नि.), संजीव लूम्बा, से.मे., कार्यकारी अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ई सी आई एल की उपस्थिति में एन आर एस सी के उप निदेशक श्री डी.एस.जैन ने अंटार्कटिका में भारती स्टेशन के लिए अंटेना प्रणाली की रवानगी 14 सितंबर, 2012 को किया। अंटार्कटिका में इसको प्रतिकूल परिस्थितियों में कार्य करना पडेगा। इस परियोजना को श्री सी एच.वी.आर.एस. गोपालाकृष्णा, अधिशासी निदेशक, ई सी आई एल तथा श्री एम. सत्यनारायण, परियोजना निदेशक, एन.आर.एस.सी. के निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरा किया गया। इस अंटेना की स्थापना ई सी आई एल इंजीनियरों द्वारा वहाँ की ग्रीष्म ऋतु में अंटार्कटिका में दिसंबर 2012 से मार्च 2013 के दौरान किया जाएगा। ग्लोबल प्रतिस्पर्धा के दौर में ई सी आई एल ने इस महत्त्वपूर्ण परियोजना को भारती स्टेशन अंटार्कटिका में पृथ्वी परीक्षण उपग्रह और संचार फैसिलिटी के लिए ग्राउंड स्टेशन स्थापित करने हेतु राष्ट्रीय दूर संवेदन केंद्र (एन आर एस सी), भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, अंतरिक्ष विभाग, हैदराबाद से आगे बढ़कर प्राप्त किया है।

इस परियोजना में भारती स्टेशन, अंटार्कटिका और एन.आर.एस.सी., शादनगर को लिंक करने वाले सी-बैंड में मल्टी मिशन रिमोट सेन्सिंग सेटेलाइट और डाटा कम्युनिकेशन स्टेशन (डी.सी.एस.) के लिए X और S बैंडों में ऑपरेट हो रहे डाटा रिसेप्सन सेन्टर (डी.आर.एस.) की डिजाइन, विकास, फैब्रिकेशन, परीक्षण, स्थापना और उसको सक्रिय करना सम्मिलित है। यह संचार फैसिलिटी उच्च गति के 2 x 4zMbps उपग्रह 'ए डाटा' को रियल टाइम में एन.आर.एस.सी. और @ 4 Mbps 'टू वे संचार सेवा' को एन.आर.एस.सी. (वी.ओ.आई.पी., वीडियो कॉन्फ्रेन्सिंग, एन.आर.एस.सी. में रिमोट ऑपरेशन, टी टी सी ऑपरेशन, वॉयस और फैक्स) को सपोर्ट करेगी। इसका लिंक अंटार्कटिका और एन.सी.ए.ओ.आर. (नेशनल सेन्टर फॉर अंटार्कटिका एण्ड ओसियन रिसर्च), गोवा के मध्य द्वि-मार्गी संचार सेवा स्थापित करेगा। एन.सी.ए.ओ.आर., गोवा भारतीय अंटार्कटिका सपोर्ट प्रोग्राम के समन्वय और कार्यान्वयन के लिए नॉडल एजेन्सी है।

इस उपकरण को प्रतिकूल परिस्थितियों में काम करना पड़ेगाः जैसे शून्य से अत्यंत न्यूनतम तापमान (-) 40^{0}C और हवा की गति 250 किमी प्रति घंटा। लगभग 7.5 मीटर व्यास के दो अंटेना को सेट- अप करना एक चुनौती भरा कार्य है। अंटेना को एक राडोम के अंदर रखा गया है ताकि अंटेना सर्फेस को तेज हवाओं से बचाया जा सके। अंटेना की स्थापना करने के लिए प्लेटफार्म बनाया जा चुका है।

अंटार्कटिका में मैत्री स्टेशन और भारत की जमीन से संचार- संपर्क बनाने के लिए ई सी आई एल वर्ष 2007 में मैत्री स्टेशन और एन.सी.ए.ओ.आर., गोवा के बीच संचार- संपर्क स्थापित कर चुका है।

अभी तक यह सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है और इसकी स्टेशन उपलब्धता 99% से अधिक है।

राष्ट्रीय हित में हिंदी को राजभाषा की मान्यता दी गई है।
- कवि सम्राट विश्वनाथ सत्यनारायण

मुख्यालय में ''राजभाषा सप्ताह'' का शुभारंभ

मुख्यालय में 14 सितंबर, 2012 को 10 बजे 'राजभाषा सप्ताह' का उद्घाटन हुआ। श्री रमेश अमिन्हा, प्रधान (कार्मिक व प्रशासन) तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मंच पर डॉ. सी. रमेश चंद्रा, मुख्य चिकित्सा अधिकारी विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। श्री एन. नागेश्वर राव, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्यगण, निगम के अधिकारी तथा कर्मचारी और राजभाषा सप्ताह के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के प्रतिभागी उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री मुकेश दास द्वारा प्रार्थना- गीत से हुआ।

श्री रमेश अमिन्हा, प्रमुख (कार्मिक एवं प्रशासन) तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अपने संबोधन में कहा कि भारत में अनेक भाषाएँ हैं और सभी भाषाओं का अपना गौरवशाली साहित्य है। विचारों के आदान- प्रदान के लिए भाषा एक सशक्त माध्यम है। भारत की विभिन्न भाषाओं, विचारों तथा संस्कृतियों को समाहित करने में हिंदी एक कड़ी है। राजभाषा के सफल प्रयोग के लिए कर्मचारियों को प्रोत्साहित और ई सी आई एल में कार्यान्वयन करना है। श्री एन. नागेश्वर राव, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में ई सी आई एल की राजभाषा कार्यान्वयन की उपलब्धियों से सभी को अवगत कराया। उन्होंने सूचित किया कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) द्वारा ई सी आई एल को वर्ष 2011-12 के दौरान उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए ''राजभाषा कप'' प्रदान किया जाएगा। अपने भाषण में उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील की कि राजभाषा के प्रचार- प्रसार के लिए हम सभी को एक साथ मिलकर काम करना है।

श्री यू. भारत भूषण, हिंदी प्रबंधक ने श्री सुशीलकुमार शिंदे, माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार तथा श्री रतन कुमार सिन्हा, अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग एवं सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग के ''हिंदी दिवस संदेश'' का वाचन किया। श्री देवीदास, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। डॉ. राजनारायण अवस्थी, हिंदी अधिकारी ने समारोह का संचालन किया।

श्री रमेश अमिन्हा, प्रमुख (कार्मिक एवं प्रशा.) तथा अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति दीप प्रज्वलित करते हुए। साथ में हैं डॉ. सी. रमेश चंद्रा, मुख्य चिकित्सा अधिकारी तथा श्री एन.नागेश्वर राव, उप महाप्रबंधक (राजभाषा)।